Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पर्यावरणीय परिवर्तनों का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. मीनाक्षी तिवारी*

* अर्थशास्त्र विभाग, बीसीएस शासकीय पीजी कॉलेज, धमतरी (छ.ग.) भारत

शोध सारांश – वर्तमान समय में पर्यावरणीय संकट विश्व की सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक बन चुका है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास, प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन न केवल पर्यावरणीय संतुलन को प्रभावित कर रहे हैं बल्कि इनके व्यापक सामाजिक एवं आर्थिक परिणाम भी सामने आ रहे हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य पर्यावरणीय परिवर्तनों के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि जलवायु परिवर्तन कृषि उत्पादन, स्वास्थ्य, रोजगार, आय वितरण, गरीबी तथा मानव विकास को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। साथ ही जैव विविधता के क्षरण से खाद्य सुरक्षा एवं आजीविका पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। शोध-पत्र में पर्यावरण संरक्षण एवं सतत विकास के मध्य संतुलन स्थापित करने हेतु नीतिगत सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

शब्द कुंजी –पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक प्रभाव, आर्थिक विकास, जैव विविधता, सतत विकास।

प्रस्तावना – मानव सभ्यता का विकास प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित रहा है। औद्योगीकरण, शहरीकरण तथा बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक तापमान में वृद्धि, समुद्र स्तर में बढ़ोतरी, जैव विविधता का ह्रास तथा चरम मौसमी घटनाओं की आवृत्ति में वृद्धि देखी जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) के अनुसार ग्रीनहाउस गैसों के निरंतर बढ़ते उत्सर्जन ने वैश्विक तापमान को औद्योगिक क्रांति पूर्व स्तर की तुलना में लगभग 1-5℃ तक बढ़ा दिया है तथा यदि वर्तमान प्रवृत्तियाँ जारी रहीं तो इस शताब्दी के अंत तक तापमान में 2-5℃ से 4-6℃ तक वृद्धि संभव है। इस परिप्रेक्ष्य में पर्यावरणीय परिवर्तनों के सामाजिक एवं आर्थिक प्रभावों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रमुख कारणों का अध्ययन करना।
2. सामाजिक क्षेत्र पर इनके प्रभावों का विश्लेषण करना।
3. आर्थिक गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।
4. सतत विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध पद्धति– यह अध्ययन मुख्यत: द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। अध्ययन हेतु विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, शोध-पत्रों तथा सरकारी प्रकाशनों से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया है।

पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रमुख कारण– पर्यावरणीय परिवर्तन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं।

1. जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग
2. औद्योगिक उत्सर्जन
3. वनों की कटाई
4. कृषि क्षेत्र से मीथेन उत्सर्जन
5. अनियंत्रित शहरीकरण
6. प्राकृतिक संसाधनों का अति-दोहन

इन कारणों से वातावरण में कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन तथा अन्य ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा में वृद्धि होती है, जिससे वैश्विक तापमान बढ़ता है।

पर्यावरणीय परिवर्तन के सामाजिक प्रभाव

1. **स्वास्थ्य पर प्रभाव –** जलवायु परिवर्तन के कारण हीट वेव, बाढ़, सूखा एवं संक्रामक रोगों की घटनाओं में वृद्धि हुई है। बढ़ते तापमान से मृत्यु दर तथा बीमारी की घटनाएँ बढ़ती हैं, विशेषकर वृद्ध एवं बच्चों में।
2. **खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव –** अनियमित वर्षा, सूखा तथा बाढ़ कृषि उत्पादन को प्रभावित करते हैं। परिणामस्वरूप खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि होती है और गरीब वर्ग सबसे अधिक प्रभावित होता है।
3. **विस्थापन एवं प्रवसन –** समुद्र स्तर में वृद्धि, सूखा तथा प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोगों का बड़े पैमाने पर पलायन हो रहा है। इससे शहरी क्षेत्रों पर अतिरिक्त दबाव उत्पन्न होता है।
4. **सामाजिक असमानता –** जलवायु परिवर्तन का प्रभाव समाज के कमजोर वर्गों पर अधिक पड़ता है। इससे आय एवं अवसरों की असमानता बढ़ती है।

पर्यावरणीय परिवर्तन के आर्थिक प्रभाव

कृषि क्षेत्र – भारत जैसे कृषि प्रधान देशों में जलवायु परिवर्तन का सबसे अधिक प्रभाव कृषि पर पड़ता है। अनियमित मानसून, जल संकट तथा भूमि क्षरण के कारण उत्पादन में कमी आती है।

रोजगार – कृषि, मत्स्य पालन तथा वानिकी जैसे क्षेत्रों में रोजगार के अवसर घटते हैं। इससे ग्रामीण बेरोजगारी में वृद्धि होती है।

आधारभूत संरचना – बाढ़, चक्रवात एवं अन्य प्राकृतिक आपदाएँ सड़क,

पुल, बिजली तथा संचार अवसंरचना को नुकसान पहुँचाती हैं जिससे आर्थिक गतिविधियाँ बाधित होती हैं।

4. सकल घरेलू उत्पाद– UNEP के अनुसार यदि जलवायु परिवर्तन की वर्तमान गति जारी रहती है तो 2100 तक वैश्विक GDP में लगभग 22% तक कमी आ सकती है।

जैव विविधता एवं आर्थिक विकास – जैव विविधता पारिस्थितिक तंत्र सेवाओं का आधार है। यह खाद्य सुरक्षा, औषधीय संसाधनों, जल संरक्षण तथा कृषि उत्पादकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जैव विविधता के ह्रास से पारिस्थितिक संतुलन बिगड़ता है तथा दीर्घकालिक आर्थिक विकास प्रभावित होता है।

सारणी: पर्यावरणीय परिवर्तनों के प्रमुख सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

पर्यावरणीय समस्या	सामाजिक प्रभाव	आर्थिक प्रभाव
तापमान वृद्धि	स्वास्थ्य समस्याएँ	श्रम उत्पादकता में कमी
सूखा	खाद्य असुरक्षा	कृषि उत्पादन में गिरावट
बाढ़	विस्थापन	अवसंरचना क्षति
जैव विविधता ह्रास	जीवन गुणवत्ता में कमी	कृषि एवं पर्यटन पर प्रभाव
समुद्र स्तर वृद्धि	तटीय आबादी का पलायन	संपत्ति एवं निवेश हानि

नीतिगत सुझाव:

1. नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को बढ़ावा दिया जाए।
2. वनीकरण एवं पुनर्वनीकरण कार्यक्रमों का विस्तार किया जाए।
3. जल संरक्षण तकनीकों को अपनाया जाए।
4. सतत कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित किया जाए।
5. जलवायु अनुकूल अवसंरचना विकसित की जाए।
6. पर्यावरण शिक्षा एवं जन–जागरूकता बढ़ाई जाए।
7. कार्बन उत्सर्जन नियंत्रण हेतु प्रभावी नीतियाँ लागू की जाएँ।

निष्कर्ष – पर्यावरणीय परिवर्तन केवल प्राकृतिक समस्या नहीं बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक चुनौती भी है। जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का क्षरण तथा प्रदूषण मानव स्वास्थ्य, कृषि, रोजगार एवं आर्थिक विकास को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहे हैं। सतत विकास के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु पर्यावरण संरक्षण और आर्थिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गए तो भविष्य में सामाजिक असमानता, गरीबी तथा आर्थिक अस्थिरता और अधिक बढ़ सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Drishti IAS. जलवायु परिवर्तन: एक वैश्विक चुनौती।
2. European Commission Climate Action – Causes of Climate Change.
3. European Commission Climate Action – Consequences of Climate Change.
4. UNEP. The Climate Crisis Explained in Seven Graphs.
5. Springer Nature. Environmental and Socio-Economic Impacts of Climate Change.
6. DD News. International Day for Biological Diversity.
7. United Nations Environment Programme (UNEP), Global Environment Outlook Reports.
8. IPCC Assessment Reports.

****